यूजीसी केयर लिस्टेड
जुलाई–सितम्बर 2021
वर्ष 11 अंक–23

मूल्य 100/-
ISSN [illegible]

समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति का संगम

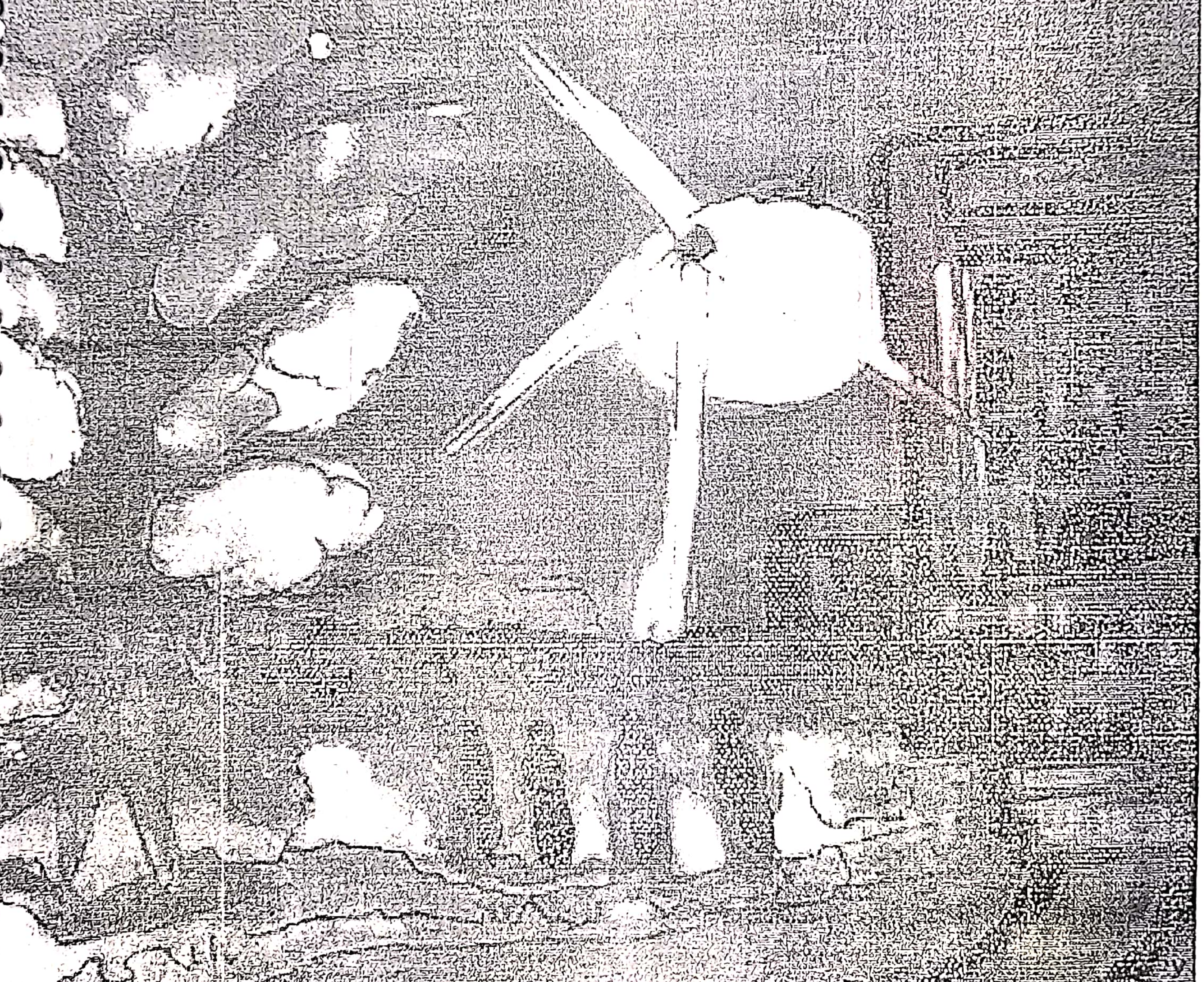

True Copy
Vice-Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara

Scanned with OKEN Scanner

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक
डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक एवं परामर्श
डॉ. रमा

संपादक
डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग
रीमा प्रजापति

आवरण चित्र
डॉ. प्रेम प्रकाश मीणा

ले-आउट
हर्ष कंप्यूटर्स

संपादकीय कार्यालय
मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार
एफ-114, तृतीय तल, SLF, वेद विहार
नियर : शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता
आजीवन : 5000/–रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
Email : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशन एवं मुद्रण
हरिन्द्र तिवारी
हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakashan88@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

पृ.सं.

- प्रवासी साहित्य : वर्तमान संदर्भ : *प्रो. सोमसिंह डांगिया* 5
- भारत में डिजिटल मीडिया को नियोजित करने की आवश्यकताएँ एवं प्रयास : *डॉ. परमवीर सिंह* 8
- 'गिलिगडु' में अपनत्व खोजती वृद्ध जिंदगियाँ : *डॉ. अनिता प्रजापत* 12
- हिंदी कविता में अभिव्यक्ति का स्त्री पक्ष : *डॉ. अरुंधति* 15
- भूमंडलीकरण के युग में सामाजिक आर्थिक परिवर्तन एक शोध परक अध्ययन : *डॉ. धर्मेंद्र कुमार खटीक* 18
- कॉविड-19 महामारी के दौरान नव-माध्यमों के द्वारा स्वास्थ्य संचार का अध्ययन : *डॉ. भारती बतरा* 21
- डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों में सामाजिक समरसता एवं विद्वानों की राय का अध्ययन : *डॉ. जयपाल मेहरा* 26
- भारत में महिला सशक्तिकरण के प्रयास : *सरिता सारस्वत* 29
- "मानवीय मूल्यों के आलोक में राष्ट्रीय मानव अधिकार की प्रांसगिकता" : *कृष्णदेव राय* 32
- भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता का एक अध्ययन : *डॉ. राहुल कुमार पासवान* 35
- बिहार और पिछड़ावाद की राजनीति का एक अवलोकन : *अर्चना कुमारी* 38
- प्राचीन काल में संचार व्यवस्था एवं सामाजिक संबद्धता का एक अवलोकन : *डॉ. विवेक कुमार* 42
- भारतीय विदेश नीति का सैद्धांतिक एक अवलोकन : *सुधांशु शेखर* 45
- बिहार में महिलाएँ प्रशासनिक स्वालंबन की राह पर : *सौरभ सुमन* 48
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत-अमेरिका संबंध : *डॉ. गौरव कुमार शर्मा* 51
- जलवायु परिवर्तन : दक्षिण पूर्वी राजस्थान में वर्षा का बदलता स्वरूप : *हंसा मीणा* 54
- "राजस्थान के पुलिस प्रशासन में कांस्टेबुलरी की भूमिका" : *राहुल वर्मा* 57
- श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित संतों का सामाजिक दृष्टिकोण : *मनजीत कौर* 60
- 'मुझे चाँद चाहिए' में नारीचेतना : *डॉ. सतीश कुमार पांडेय* 62
- 'जल टूटता हुआ' उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ : *डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह* 65
- मंगलेश डबराल की कविता में बिंब विधान : *केशव यादव* 68
- मीडिया के सामाजिक और आर्थिक पहलूका अध्ययन : *विक्रम गार्वडिया* 71

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच. ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित।*

True Copy
Principal
Kisan Veer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara - 412 803

Scanned with OKEN Scanner

- राधाचरण गोस्वामी की राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना : *डॉ. कामना पाण्डेय* 333
- पब्लिक स्कूल एवं अनुदानित इण्टर कॉलेज में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन : *डॉ. राजेश कुमार* 337
- रश्मिरथी का नया पाठ : *डॉ. प्रशांत गौरव* 341
- सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक साहित्य के विकास में सम्मेलन पत्रिका का योगदान *त्रिभुवन गिरि* 344
- अवध का प्रथम नवाब सआदत खाँ बुरहान-उल-मुल्क : *डॉ. चित्रगुप्त* 347
- हवेली संगीत में ब्रज के होरी गीतों की परंपरा व परिवर्तित स्वरूप *डॉ. स्मृति त्रिपाठी* 350
- उत्तराखण्ड की पत्रकारिता से गुजरते हुए दलित पत्रकारिता : *डॉ. राम भरोसे* 353
- तुलसी की भक्ति भावना : एक समीक्षा *डॉ. आर्यकुमार हर्षवर्धन* 356
- जायसी कृत पद्मावत में सांस्कृतिक समन्वय *डॉ. रश्मि शर्मा* 358
- भूमंडलीकरण, वसुधैव कुटुंबकम और अमेरिकीकरण : *नीरज* 362
- हिंदी साहित्य में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन *डॉ. राखी उपाध्याय* 366
- राष्ट्रीय-सांस्कृतिक मूल्यों के प्रस्तोता नाटककार जयशंकर प्रसाद : *डॉ. नीतू शर्मा* 369
- रमेशचंद्र शाह के उपन्यासों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्षों की प्रासंगिकता *कृपा शंकर* 372
- 'अभ्युदय' उपन्यास में नारी विषयक चेतना *पंकज सिंह* 375
- ज्ञानरंजन की कहानियों में भाषा एवं शैली का साहित्यिक अनुशीलन : *अर्जुन यादव* 379
- शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में ग्रामीण अनुशीलन : *सीमा यादव* 382
- प्रतापनारायण मिश्र के लोक साहित्य की सामाजिक प्रादेयता : *विशाल मिश्र* 385
- पारंपरिक कृषि पद्धति पर सुराजीगाँव योजना का प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन *एस कुमार-सपना शर्मा सारस्वत* 387
- स्वराज्य, आत्मनिर्भरता और आदर्श राज्य की अवधारणा भारतीय विचारकों के दृष्टिकोण में *डा. सुनीता* 392
- विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में सांस्कृतिक चेतना *अनिरुद्ध कुमार* 395
- डॉ. अस्तअली खाँ मलकांण के काव्य में लोक संस्कृति : *डॉ. ईश्वर सिंह* 398
- मुक्तिबोध की कहानियाँ : वैचारिकी के कलेवर में आख्यान : *डॉ. राम किंकर पाण्डेय* 400
- प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी के बाल साहित्य में मानवीय मूल्य : *डॉ. श्रवण राम* 403
- आदिवासियों के संदर्भ में बिहार की संस्कृति का अध्ययन : *मिथिलेश कुमार मिश्र* 406
- भूमंडलीकरण, वसुधैव कुटुंबकम और अमेरिकीकरण : *नीरज* 409
- पूर्ववर्ती हिंदी कहानी से समकालीन हिंदी कहानी में उपेक्षा का जटिल होता रूप : बदलाव और चुनौतियां : *डॉ. रिंपी खिल्लन सिंह* 413
- खेलत गेंद गिरे यमुना में : 'पीड़ा के दंश' कहानी की कथावस्तु में स्त्री : *रश्मि* 416
- गणित अध्ययन : हिंदी माध्यम की चुनौतियाँ *डॉ. प्रीति धमांर्ह* 419
- सुभद्रा कुमारी चौहान समसामयिकता के संदर्भ में मुख्यता : *अनीता उपाध्याय* 422
- गोदान और किसान का अंतःसंबंध *विजय यादव* 425
- कमलेश्वर की कहानियों में आधुनिक जीवन का यथार्थ चित्रण : *डॉ. आभा शर्मा* 429
- प्रेमचंद के कृतित्व की साहित्यिक मूल्यांकन पत्रकारिता के संदर्भ में : *मुन्ना* 432
- स्त्री अस्मिता की दृष्टि से मोहन राकेश के नाटकों में नारी का सामाजिक स्वरूप *संगीता कुमारी पासी-डॉ. कुसुम कुंज मालाकार* 435
- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य पर जयनंदन के कहानी साहित्य में संवैधानिक मूल्यों का प्रभाव *डॉ. आनंदकर मानदास भिकाजी* *श्री. इंगरो दादासाहेब आनंदराव* 439
- शिक्षा के क्षेत्र में सूचना प्रोद्योगिकी का प्रदेय *डॉ. आभा एन. पवार* 442
- विष्णु प्रभाकर के नाटकों में जीवन-दर्शन *डॉ. सीमा डोंगरा* 444
- मिथक का अर्थ एवं स्वरूप : भारतीय दृष्टिकोण : *डॉ. गुरदीप रानी* 447
- भारतीय महिला आंदोलन में गांधी के योगदान : *मीना चरांदा* 450
- शिवबच्चन सिंह यादव 'सहायक प्राध्यापक' *रामेश्वर सिंह* 453
- भोजपुरी नाटक परंपरा और सुरेश कांटक के नाटक : *प्रियंका कुमारी* 457
- मैला आंचल में परिवेशगत आंचलिकता *डॉ. महेंद्र पाल सिंह* 459
- हिंदी सिनेमा पर वामपंथ का प्रभाव *शिवेंद्र राणा* 462

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य पर जयनंदन के कहानी साहित्य में संवैधानिक मूल्यों का प्रभाव

डॉ. आगेडकर भानुदास भिकाजी
श्री. डवरी दादासाहेब आनंदराव

समाज की नींव संवैधानिक मूल्यों के आधार पर होती है। मनुष्य मूल्यों के आधार पर ही अपना अस्तित्व निर्माण करता है। कहानी अभिव्यक्ति की एक सशक्त और समर्थविधा है। यथार्थ के बारे में स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य की बढ़ोतरी हो रही है। आधुनिक कहानीकारों में जयनंदन जी का अपना एक स्थान है। उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर कहानी साहित्य में मूल्यों की समस्या के माध्यम से आज की वर्तमान स्थिति की बेहाल स्थिति को दर्शाने का भरसक प्रयास किया है। अपने कहानी साहित्य के माध्यम से समाज में ज्वलंत समस्या को प्रतिबिंबित किया है। विभिन्न बातों का चित्रण उनके कथा साहित्य में पढ़ने को मिलता है। इन्हीं साहित्यिक दृष्टि ने मेरे मन में कई सवाल निर्माण हुए।क्या जयनंदन जी के कहानी साहित्य में संवैधानिक मूल्यों का जिक्र हुआ है? क्या कहानियों के माध्यम से मूल्यों का प्रभाव समाहित हुआ है? इन्हीं सवालों के समाधान हेतु मैंने प्रपत्र के लिए यह विषय तय किया है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य पर जयनंदन के कहानी साहित्य में संवैधानिक मूल्यों का प्रभाव

1. समता के अधिकार का मूल्य

जयनंदन जी ने कहानी के माध्यम से समता के अधिकार को बढ़ावा दिया है। वे समता से भारत के लोगों में समभाव अभिव्यक्त करना चाहते हैं। समता का अधिकार संविधान में अनुच्छेद 14-18 में प्रस्तुत किया है।

'कस्तूरी पहचानो, वत्स' कहानी में दस पात्र हैं। कहानी में जुबैदा नाम की मुस्लिम लड़की प्रमुख पात्र है। जुबैदा तीक्ष्ण एवं प्रतिभाशाली विद्वान है। जुबैदा ने संस्कृत में एम.ए. और वेद, पुराण, रामायण के साथ कालिदास, बाणभट्ट शूद्रक आदि के लिखे पर अपनी विद्वता हासिल की है। जुबैदा को कॉलेज में संस्कृत अध्यापक की नौकरी मिल गई है। दुल्ली मिसिर इसी कॉलेज के संस्थापक के पुरोहित थे और उनके बेटे को इस पद के लिए अयोग्य माना गया था। इसी कारण कॉलेज के लडकों ने जुबैदा से पढ़ने से मना कर दिया कि हम एक मुसलमानिन से संस्कृत नहीं पढ़ेंगे। यह बात पूरे गांव में चारों तरफ फैल गई, तो जुबैदा से शादी के लिए पूरी बिरादरी वाले पीछे हट गए। आखिर में इस विद्वान लड़की की शादी चार बच्चों के रडुआ बाप सुलेमान से हो गई। शादी के दिन ही सुलेमान ने जुबैदा को धमकाया कि वह संस्कृत का एक शब्द भी अपने मुँह से नहीं।

निकालेगी। अब जुबैदा के जीवन का नीरस और कठोर दौर शुरु होता है।

एक दिन मंदिर में पंडित जी संस्कृत के श्लोक का गलत उच्चारण कर रहे थे। जुबैदा ने पंडित जी कोयह बात बताई। पंडित रामजतन तमतमाकर उठ खड़े हुए, "तो चंडालिन कहीं की, तुम्हारी यह मजाल कि तू मुझे उच्चारण सिखाए।"[1] इस बात को लेकर सुलेमान और उसके परिवार वालों ने जुबैदा की जमकर पिटाई की और उसपर धार्मिक सहिष्णुता भंग करने का आरोप लगाया गया। कुछ दिन बाद जुबैदा के पिता सफर मियाँ के मित्र तारक बाबू बहुत बीमार थे, और उनकी आखिरी इच्छा थी कि वह जुबैदा की जुबान से गीत पाठ सुनना चाहते थे। इच्छा पूर्ति के लिए जुबैदा ने गीता पाठ करना स्वीकार किया। जुबैदा गीता का पठन कर ही रही थी। सुलेमान अपने मक्कार दोस्तों के साथ तारक बाबू के घर आया। जुबैदा को बालों से पकड़कर खड़ा करते हुए बोला, "चुड़ैल! तूने यहां आने की हिम्मत कैसे की, जबकि मैंने मना कर दिया था।"[2]

जुबैदा ने कहा कि गीता पाठ समाप्त कर के ही मैं घर वापस आऊँगी। उसके घर लौटने पर सुलेमान और उसके कुछ साथी भेड़ियों के माफिक उस पर टूट पड़े। चार साथियों ने मिलकर उसके हाथ-पैर पकड़े और पाँचवें ने तेज हथियार से उसकी जीभ काट ली। वह तड़पती रह गई कुछ बोल ना सकी। दीवार पर तलाक-तलाक- तलाक लिखती रही। प्रस्तुत कहानी हिंदू-मुसलमान दो में धर्मों में स्थित सांप्रदायिक असहिष्णुता को उजागर करती है। जिसमें जुबैदा जैसी संस्कृत विद्वान अध्यापिका को हिंदू तथा मुसलमान धर्म के हठधर्मी लोगों से मानसिक तथा शारीरिक यातना का शिकार बनने की, तथा दो धर्मों में स्थित असंवेदनशीलता को चित्रित किया है। साथ ही जुबैदा में स्थित एक अध्यापक एक औरत जाग जाती है और कर्तव्य कठोर बनकर अपने पति को तलाक देकर अपनी औरत का सम्मान करती हुई दिखाई देती है। जुबैदा ने कहा कि गीता पाठ समाप्त कर के ही

True Copy
Vice Principal
Kisanveer Mahavidyalaya
Wai, Dist. Satara - 412 803

Scanned with OKEN Scanner

शहर ले जाना चाहता है। अम्मा समझ नहीं पाती है कि वह किसे अपना बेटा कहे पंचानन को या मुस्तफा को। वह कहती है, कि मेरे मरने के बाद मेरी अस्थि को यहीं इसी छठ तलैया में विसर्जित कर देना। प्रस्तुत कहानी धार्मिक सौहार्द के चित्रण के साथ माँ के धार्मिक आस्था के प्रति बेटे की अनास्था का तथा अपनी माँ के प्रति बुढ़ापे में बढ़ती गई बेटे की लापरवाही का असंवेदनशीलता के साथ चित्रण करती है। कहानी धर्मनिरपेक्षता को सटिकता से उजागर करती हुई दृष्टिगोचर होती है।

5. संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार का मूल्य

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार का मूल्य संविधान में अनुच्छेद 29-30 में प्रस्तुत किया है। 'मुजफ्फरपुर की लीची' कहानी में एक ईमानदार, आदर्शवादी, बौद्धिक और कद्दावर शिक्षक का चित्रण किया है। कहानी में कुल सात पात्र हैं। कहानी के मुख्य पात्र मास्टर ब्रजभूषण बाबू है, जो की बहुत ही ईमानदार है। मास्टर ब्रजभूषण बाबू किसी भी प्रलोभन के शिकार नहीं होते हैं। परीक्षा के उत्तर पुस्तिका जाँचते समय किसी पैरवी या सिफारिशों को नहीं सुनते हैं। मास्टर ब्रजभूषण बाबू पर दबाव डालकर परीक्षा में अंक बढ़ाने के लिए एक खूँखार पेशेवर अपराधी को भेजा जाता है, लेकिन वह तनिक भी विचलित नहीं होते हैं। कुछ लोग उन्हें रिश्वत देकर अंक बढ़ाने की कोशिश करते हैं। गुणी अध्यापक किसी भी छात्र के मार्क्स घटाने और बढ़ाने के हेतु कार्य नहीं करता है। मास्टर ब्रजभूषण एक गुणी अध्यापक है। मास्टर जी अब बेकाबू हो उठे, "क्या समझ रखा है आप लोगों ने अंक कोई जिंस है जिसे पैसे दिए और खरीद लिया.... मास्टर कोई कुत्ता है जिसे रोटी दी और भौंकवा लिया. ... चले जाइए आप यहाँ से... ''[4] प्रस्तुत कहानी में आदर्श, ईमानदार, न्यायप्रिय, विवेकशील तटस्थ तथा प्रलोभन से न डगमगानेवाला और पैसे से गलत राह पर चलनेवालों को फटकारनेवाले गुणी अध्यापक का चित्रण किया है।

जयनंदन जी ने कहानियों के माध्यम से संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार के मूल्य को दर्शाने का प्रयास किया है।

6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार

संवैधानिक उपचारों का अधिकार संविधान में अनुच्छेद 32 में प्रस्तुत किया है। 'माफिया सरदार' कहानी ईमानदार कर्तव्यपरायण पुलिस आफिसर के चरित्र को उजागर करनेवाली प्रातिनिधिक कहानी है। अपने कर्तव्य का पालन करनेवाले पुलिस अफसर वारिस अली उन्हें अपने कर्तव्य से विचलित कर अपना लाभ चाहते हैं। कहानी के मुख्य पात्र वारिस अली पुलिस आफिसर है। कहानी ईमानदार पुलिस ऑफिसर के सच्चरित्र और कुख्यात मुस्लिम अपराधी अफजल के आतंकी कारनामों पर केंद्रित है।

अपराधी अफजल मियाँ ने पुलिस अफसर वारिस अली को बहुत प्रलोभन देकर अपने पक्ष में लेने का सोचा था लेकिन वारिस अली ने प्रलोभनों को कतई स्वीकार नहीं किया। हमेशा उसका विरोध किया। इस बात से अफजल मियाँ नाराज हो गया। वारिस अली ने विरोध करने पर अफजल ने उनके घर के बाहर बम लगाया। बम के धमाके से उनके घर की दीवार गिरी और उसमें उनकी बेटी सोहना एक पैर से अपाहिज हो जाती है। "वारिस का सारा किया-धरा बेमतलब सिद्ध हो गया था। अपनी बेटी के एक पांव गंवाने का कष्ट अब उसे हमेशा सालता रहता।"[5] इस हादसे के बाद अफजल को लगता था कि वारिस अली अपने कर्तव्य पालन से विचलित होगा लेकिन ऐसा नहीं होता। ईमानदारी से काम करने वाले पुलिस वारिस अली विभाग और जनता का प्यार हासिल करते हैं। "तुम्हारे अभिमान में ऊपर का कोई अंकुश नहीं होगा।... चूँकि विभाग को तुम्हारी ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता और निष्ठा पर संदेह नहीं, रहा है।"[6]

निष्कर्ष

जयनंदन जी का कहानी साहित्य संवैधानिक मूल्यों के प्रभाव के दृष्टि से उच्चतम कोटि का बना है। समता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शोषण के विरुद्ध का अधिकार, संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार, धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार आदि के मूल्यों के प्रभाव उनकी कहानियां में झलकते हैं। संवैधानिक मूल्यों का प्रभाव बढ़ाने के लिए कहानियाँ सक्षम बनी हैं। जयनंदन जी ने कहानी साहित्य के माध्यम से व्यक्ति, समाज तथा देश में संवैधानिक मूल्यों को उजागर करने का प्रयास किया हैं।

संदर्भ :

1. जयनंदन-कस्तूरी पहचानो, वत्स-कस्तूरी पहचानो, वत्स-आधार प्रकाशन, हरियाणा-2001, पृष्ठ-1152, जयनंदन-कस्तूरी पहचानो, वत्स-कस्तूरी पहचानो, वत्स-आधार प्रकाशन-हरियाणा-2001, पृष्ठ -1213। जयनंदन–गाँव की सिसकियां–गाँव की सिसकियाँ–पुस्तक भवन, नई दिल्ली 2012 पृष्ठ 1714। जयनंदन- सन्नाटा भंग - मुजफ्फरपुर की लीची-दिशा प्रकाशन, दिल्ली-1993, पृष्ठ-1585, जयनंदन-एक अकेले गान्ही जी-माफिया सरदार-नेशनल पब्लिशिंग हाउस-दिल्ली-2001-पृष्ठ-306, जयनंदन एक अकेले गान्ही जी-माफिया सरदार नेशनल पब्लिशिंग हाउस-दिल्ली 2001-पृष्ठ 25